Sanginee

संगिनी

Smile... Stride... Scintillate

आज़ादी का अमृत महोत्सव

नालको NALCO

अक्टूबर - दिसम्बर 2022

Editor-in-Chief
Sasmita Patra, President
NALCO Mahila Samiti

Editorial Board
Lina Mohapatra
Swayamprava Rath
Himanshu Rai

Co-ordinator
Kamana Singh

Assistant Co-ordinator
Aakanksha Gupta

Design Concept
Bibhu Prasad
Himanshu Rai

October to December
2022

प्रकाशक
नालको महिला समिति के
संयुक्त प्रयास से राजभाषा प्रकोष्ठ,
नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

संपादकीय

जीवन को जीने के लिए सपने सजाना जरूरी है। नीले – नीले मेघों में, अप्रस्फुटित कलियों में, पथरीले रास्तों पर बहने वाले झरने की कल-कल ध्वनि में, राह में आने वाली मुश्किलों का सामना करते हुए आगे बढ़ने वाले नदियों की धारा में, मिट्टी को चीरकर पादप का आकार लेने वाले बीज सपने ही तो सजाते हैं। यही स्वप्न आगे बढ़ने का सहारा हैं। पारम्परिक जीवन में आगे बढ़ने के लिए स्वप्न का ही आसरा होता है। नव वर्ष के लिए हम नए-नए स्वप्न देखते हैं। कई सारी योजनाएँ, कई सारी प्रतिज्ञाएँ लेते हैं। युवाओं में यह उन्माद अधिक होता है।

कई सारी योजनाओं, प्रतिज्ञाओं, आशाओं, लक्ष्यों, जीत की खुशी तथा हार के भय के साथ हम अपने नए वर्ष का तानाबाना बुनते हैं। हम अपने घर, दुकान, बाज़ार, रास्तों को सजाकर अपने स्वप्न के परिवेश को गढ़ते हैं।

अँग्रेज़ी का नव-वर्ष अब मात्र अँग्रेजी के नव-वर्ष तक ही सीमित नहीं है। ईसा मसीह का जन्मदिवस 'क्रिसमस' भी अब लोकपर्व का रूप ले चुका है। गाँव हो या शहर सभी जगह एक दूसरे को केक, उपहार बाँटने की परम्परा बन चुकी है। क्रिसमस सभी को स्नेह व प्रेम के धागे में पिरोता है। वर्ष के ये कुछ दिन – क्रिसमस से लेकर नव-वर्ष तक समग्र विश्व में जोश व उमंग का वातावरण रहता है। हर्ष तथा उल्लास के साथ सभी पुराने वर्ष की विदाई तथा नव-वर्ष का स्वागत करते हैं।

नव-वर्ष में मात्र स्वप्न देखना ही पर्याप्त नहीं है। जिस प्रकार एक बीज को फलदायक वृक्ष बनने तक निष्ठा, एकाग्रता, श्रम तथा साधन की आवश्यकता होती है, उसी तरह नए समाज के गठन के स्वप्न को साकार करने के लिए हमें उत्साह, सेवा, त्याग, सहिष्णुता के मंत्र को अपनाना होगा। हमारा परिश्रम ही हमें फल देगा।

युवाओं हेतु उचित मार्ग प्रशस्त करने में नारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। समाज के निर्माण के लिए माँ, बहन और अर्धांगिनी इत्यादि विविध रूपों में नारी प्राचीन काल से ही कई सारी भूमिकाएँ निभाती आई है। आइए, इस नव-वर्ष में एक नए सुंदर समाज के निर्माण का प्रण लें और अपने जन्म को सार्थक करने का प्रयास करें।

भगवान श्री जगन्नाथ के चरणों में मेरी विनम्र प्रार्थना है कि आगामी नव-वर्ष सभी के लिए शुभ, उत्तरोत्तर उन्नति, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि दायक हो।

सस्मिता पात्रा

ସମ୍ପାଦକୀୟ

ଜୀବନଟିଏ ବଞ୍ଚିବାକୁ ହେଲେ ସ୍ୱପ୍ନଟିଏ ବୁଣିବାକୁ ହୁଏ। ଭସା ବାଦଲର ନୀଳ ମେଘି ଛାତିରେ। ବନବୀଥିକାର ଅସୁମାରି ଅସ୍ଫୁଟ କଳିକାରେ, ବନ୍ଧୁର ପାହାଡ଼ି ଝରଣାର ଛଳଛଳ ଛନ୍ଦରେ, କେତେ ବନ୍ଧୁର ପଥ ଅତିକ୍ରମ କରି ନଦୀଟିଏ ବହି ଆସିବାରେ, ମାଟି ଫଟାଇ ବୀଜର ଅଙ୍କୁରୋଦ୍‌ଗମ ଘଟିବାରେ ବି ସ୍ୱପ୍ନଟିଏ ବୁଣିବାକୁ ହୁଏ। ସ୍ୱପ୍ନଟିଏ ସାହା ହୁଏ ଆଗକୁ ବଢ଼ିବାରେ। ଗତାନୁଗତିକ ଜୀବନରେ ନୂତନ ସ୍ଫୁରଣ ପାଇଁ ସ୍ୱପ୍ନଟିଏ ହିଁ ତ ଲୋଡ଼ା। ନୂତନ ବର୍ଷର ଆଗମନୀ ପାଇଁ ଆମେ ନୂଆ ନୂଆ ସ୍ୱପ୍ନ ଦେଖୁ। କେତେ ଯୋଜନା, କେତେ ପ୍ରତିଜ୍ଞା ଏକାଠି କରୁ। ଯୁବପିଢ଼ିଙ୍କ ପାଖରେ ଏ ଉନ୍ମାଦ ତ ଆହୁରି ପ୍ରବଳ। କେତେ ସଂକଳ୍ପ, କେତେ ଆଶା, ବଞ୍ଚିବାର ନିଶା, ହାରିବାର ଭୟ, ଜିତିବାର ମୋହ ନେଇ ସେମାନେ ସଜାନ୍ତି ତାଙ୍କର ନୂଆବର୍ଷକୁ। ଘରଦ୍ୱାର, ରାସ୍ତାଘାଟ, ଦୋକାନ ବଜାର ସର୍ବତ୍ର ସାଜସଜ୍ଜାର ସ୍ୱପ୍ନିଳ ପରିବେଶ।

ଇଂରାଜୀ ନବବର୍ଷ ଏବେ ଇଂରାଜୀ ନବବର୍ଷ ହୋଇ ଆଉ ନାହିଁ। କ୍ରୀସ୍‌ମାସ ଏକ ଗଣପର୍ବ ହୋଇ ସାରିଲାଣି। ଗାଁ ହେଉ କି ସହର, ସବୁଆଡ଼େ ପରସ୍ପରକୁ କେକ୍ ବାଣ୍ଟିବା, ଗିଫ୍ଟର ଆଦାନ ପ୍ରଦାନ କରିବା ଏକ ଚଳିତ ପ୍ରଥା ହୋଇ ସାରିଲାଣି। ଯୀଶୁଖ୍ରୀଷ୍ଟଙ୍କ ଜନ୍ମ ଦିବସ ଏହି ବଡ଼ଦିନ (Christmas) ସମସ୍ତଙ୍କୁ ସ୍ନେହ, ପ୍ରେମର ବନ୍ଧନରେ ଆବଦ୍ଧ କରେ। ବର୍ଷର ଏଇକେତେ ଦିନ Christmasରୁ ନୂଆବର୍ଷ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସମଗ୍ର ବିଶ୍ୱରେ ଏକ ଉତ୍ସାହ, ଉଦ୍ଦୀପନାର ବାତାବରଣ ଥାଏ। ହର୍ଷ, ଉଲ୍ଲାସର ସହିତ ସମସ୍ତେ ପୁରୁଣାବର୍ଷକୁ ବିଦାୟ ଦେଇ ନୂଆବର୍ଷକୁ ସ୍ୱାଗତ କରନ୍ତି।

ନୂଆବର୍ଷରେ ନୂଆ ସ୍ୱପ୍ନଟିଏ ସଞ୍ଚିଦେଲେ ଖାଲି ଚଳିବନି। ବୀଜଟିଏ ବପନ କଲେ, ବୃକ୍ଷ ହୋଇ ଫଳଦାନର କ୍ଷମତା ହାସଲ କରିବା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଗଭୀର ନିଷ୍ଠା, ଏକାଗ୍ରତା, ଶ୍ରମ, ସାଧନା ଜାରି ରଖିବାକୁ ପଡ଼େ। ଠିକ୍ ସେହିପରି ଆମ ସମାଜ ଗଠନ ସ୍ୱପ୍ନକୁ ସାକାର କରିବା ପାଇଁ ଅଦମ୍ୟ ଉତ୍ସାହ, ସେବା, ତ୍ୟାଗ ସହିଷ୍ଣୁତାର ମନ୍ତ୍ରରେ ଆମକୁ ଅଭିମନ୍ତ୍ରିତ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ। ଆମ ଅଧ୍ୟବସାୟ ହିଁ ଆମର ପାଥେୟ ହେଉ।

ଯୁବପିଢ଼ିକୁ ଗଢ଼ିବାରେ ନାରୀର ଅବଦାନ ଅତୁଳନୀୟ। ଜନନୀ, ଭଗିନୀ ଜାୟା ଇତ୍ୟାଦି ବିବିଧ ରୂପରେ ନାରୀ ସମାଜ ଗଠନ ନିମନ୍ତେ ମୁଖ୍ୟ ଭୂମିକା ସର୍ବଦା ଗ୍ରହଣ କରି ଆସିଛି। ଆସନ୍ତୁ ଏ ନବବର୍ଷରେ ଏକ ସୁନ୍ଦର ସମାଜ ଗଠନର ଗୁରୁଦାୟିତ୍ୱ ବହନ କରିବା ଓ ନିଜ ଜନ୍ମର ସାର୍ଥକତା ଲାଭ କରିବା। ଆଗାମୀ ନବବର୍ଷ ସମସ୍ତଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭଙ୍କର ହେଉ। ସମସ୍ତଙ୍କର ଉତ୍ତରୋତ୍ତର ଉନ୍ନତି, ଉତ୍ତମ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ସୁଖ, ସମୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ଜଗତର ନାଥ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ପଦ୍ମପାଦରେ ମୋର ପ୍ରାର୍ଥନା।

ସସ୍ମିତା ପାତ୍ର

भ्रूण हत्या

हमारी भारतीय संस्कृति, जहाँ कन्या को देवी का दर्जा दिया गया है। उनके स्वरूप को हम काली दुर्गा और सरस्वती के रूप मे पूजते हैं। जहाँ नवरात्र और देवी जागरण के समय कन्या पूजन की परंपरा चली आ रही है। आज उसी भारत में कन्या को उसके माँ के गर्भ में समाप्त कर देने की शर्मनाक परंपरा चल रही है। कन्या भ्रूण हत्या सामान्य तौर पर एक महापाप है। समाज के कुछ अज्ञानी लोग इस महापाप को बढ़ावा देते हैं। अजन्मी बच्ची को उसके माँ के पेट में मार देते हैं। क्योंकि वह एक लड़की है। हमारे समाज में एक लड़की होना भी अपराध है। अपराधी तो पूरा समाज होता है; पर अपराध एक लड़की होती है! लैंगिक भेदभाव के वजह से ही मुख्यतः कन्या भ्रूण हत्या होती है। क्योंकि हमारे समाज में महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों को प्राथमिकता दी जाती है। पुरुष परिवार की पहचान के रूप में समझे जाते हैं। कन्या भ्रूण हत्या के कारण अनगिनत हैं जैसे लड़की को लड़के से कम आंकना पुरुष वंश को आगे बढ़ते हैं, पर एक लड़की नहीं। दहेज प्रथा भी एक कारण हो सकता है। भ्रूण हत्या के लिए समाज में ये गलतफहमी है कि लड़का अपने अभिभावक की सेवा करते है। जबकि लड़कियाँ पराया धन होती है। अभिभावक मानते हैं कि पुत्र समाज में उनके नाम को आगे बढ़ाएंगे जबकि लड़कियाँ केवल घर संभालने के लिए होती हैं। गैरकानूनी लिंग परीक्षण भी कन्या भ्रूण हत्या का दूसरा बड़ा कारण हो सकता है। आधुनिक तकनीकी ने भी कन्या भ्रूण हत्या को बढ़ावा दिया है। कन्या भ्रूण हत्या का अशिक्षा और गरीबी से उतना संबंध नहीं जितना की दकियानूसी एवं स्वार्थी मध्यमवर्गीय समाज की अमानवीय सोच से है। लगता है कि ऐसे लोगों में लिंग चयन की मानसिकता विकृत होकर उभर रही है। इस निंदनीय कार्य के कुपरिणाम सामने आ रहे है। देश के अनेक राज्य में लड़के और लड़कियों के अनुपात में चिंताजनक गिरावट आ गई है, यदि सभी लोग पुत्र की कामना करेंगे तो पुत्रियाँ कहाँ से आएँगी। वंश कैसे आगे बढ़ेगा विवाह कैसे होगा। पर इस महापाप में नारियों की भागीदारी भी होना बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। पर वे भी शायद मजबूर हैं, पर जब तक नारी को सामाजिक और आर्थिक रूप से बोझ समझा जाएगा, तब तक ये महापाप होता रहेगा। यह एक सामाजिक अपराध है जिसे रोकना हमारा ही कर्तव्य है। इस अपराध को रोकने और समाज को अच्छा बनाने के लिए हमें ही पहल करनी होगी और शुरुआत हमें अपने से ही करनी पड़ेगी। अपनी सोच के दायरे को दकियानूसी बातों और भेदभाव से ऊपर उठकर बेटियों को आगे बढ़ाना है।

जब परमात्मा मानव की संरचना करने में भेदभाव नहीं करते तब हम क्यों ये भेदभाव करे। बेटा अगर दीपक है तो बेटी भी प्रकाश है। दोनों अगर साथ हैं तो जगमग संसार है।

अंजनि गुप्ता
नालको नगर, अनुगुळ

'काश़ ऐसा होता'

काश़ ऐसा होता,
बचपन का वो सुनहरा दिन
फिर लौट आता।
वो खेलना – कुदना, हँसना-रोना,
मौज - मस्ती और झूले – झूलना,
वो बारिश़ में भीगना
और कागज़ की नाव बनाना,
रूठना झगड़ना, फिर गले लगाना,
रोज़ दोस्तों से मिलना, ख़ूब ऊधम मचाना,
पेट दर्द का बहाना बनाना और स्कूल न जाना,
पापा के साथ घूमने जाना,
खिलौनों के लिए ज़िद करना,
बहुत मुश्किल है इन यादों को भुलाना।
कितने अच्छे थे वो दिन,
भूले नहीं आज भी वो दिन,
कितना प्यारा था बचपन का ज़माना,
काश़ लौट आता वो अनमोल ज़माना।

स्नेहा पाल,
दामनजोड़ी

हमें भी जीने दो

हमें भी जीने दो
दो घूट जिंदगी, पीने दो,
ना मारो हमें यू कोख में,
हमें भी गोद में, पलने दो,
ना फेंको हमें कचरे के ढेर में,
हमें कुछ पल तो, बढ़ने दो,
हर मोड़ जिंदगी में रहूँगी
सदा साथ खड़ी,
हो "मां", "पत्नी", या "बेटी" तेरी,
खिला दूँगी जीवन बगिया तेरी,
"माटी कि गुड़िया" या फिर
"सोन चिड़िया" तेरी,

दिए पंख अगर, परवाज़ भी दो,
हमें स्वछंद आकाश, तो दो,
कुछ और नहीं तो,
हौसलों की उड़ान तो दो,

बन जाऊंगी, "अभिमान" तेरा,
तुम बस थोड़ा "सम्मान" तो दो,
गर बुझा दिया "लौ" ही तो,
"दीप" कहाँ से लाओगे,
वंश बेल, फूल खिलाऊंगी,
तुम बस, "ममता की छाव" तो दो,

हमें भी जीने दो,
दो घूट जिंदगी, पीने दो॥

प्रियंका पाल
अनुगुळ

बस भी करो...

बसी भी करो...........
उन चीखों को कैद करना,
उन पैरों को जकड़ना,
उन मासूम़ सी हँसी को रौंदना,
उमड़ते हुए उसके भावनाओं को मसलना,
अब....... बस भी करो।

क्यों नहीं मिलता आदर उसको,
कोई न करता प्यार उसको,
शुभ-अशुभ में तौलते उसको,
निरंतर मिलता बस तिरस्कार उसको,
कब तक सहेगी, कब तक जलेगी,
अब....... बस भी करो।

काश मेरे नसीब़ में होती वह,
आँगन में मेरे खेलती वह,
सौ नख़रे दिखाती.. हजारों सपने सजाती,
बात-बात पर रो के, अपनी बात मनवाती।

नन्हें कदमों में फिर वह,
चारों ओर उधम मचाती।
ऐ काश .... मेरे नसीब़ में होती वह...
कब तक है ऐसा होना,
आख़िर कब तक है इन्हें खोना।

कोख़ में न दफ़ना उसको,
दुनिया में दो पहचान उसको।

बेटा-बेटी का भेद भूलाकर,
बस रखना है उसे दिल में संजोकर।
बिन उसके सृष्टि थम ही जाना,
सबके दृष्टि में यह सच है लाना।
बिन माता दुनिया कैसी दिखेगी?
आख़िर बिन बिटिया दुनिया कैसे बढ़ेगी?

स्वाति सुनीता महापात्र
अनुगुळ

"कार्तिक" पावन मास

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार कार्तिक मास चातुर्मास का सबसे प्रमुख मास माना गया है। पुराणों मे इस मास को खास बताया गया है । इस मास के देवोत्थान एकादशी पर भागवान विष्णु चार महीने की निद्रा के बाद जागृत होते हैं। इसलिए इस दिन को पवित्र दिन माना जाता है। भगवान के जागते ही 4 महीने से रूके हुए सभी प्रकार के मांगलिक कार्य फिर से शुरु हो जाते हैं। कार्तिक महीने मे गंगा स्नान, दीप दान और यज्ञ अनुष्ठान जैसे पवित्र कार्य किए जाते हैं। इस मास को विष्णुप्रिय तुलसी की पूजा के लिए सबसे खास माना जाता है। पूरे महीने मे तुलसी पौधे के नीचे घी का दीपक जला कर तुलसी की पूजा की जाती है। यह महीना शरद पूर्णिमा से लेकर कार्तिक पूर्णिमा तक चलता हैं। कलियुग मे कार्तिक मास को मोक्ष के साधन के रूप मे दर्शया गया है और इस मास को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देनेवाला बताया गया है।

कार्तिक पूर्णिमा को देव दीपावाली नाम से जाना जाता है। इस पूर्णिमा को त्रिपुरी पूर्णिमा भी कहा जाता है, क्योंकि इस दिन भगवान शिव ने त्रिपुरासुर का वध किया था। इस जीत के अवसर पर देवताओं ने खुश होकर पूरी काशी मे सैकड़ों दीप जलाया था। तब से इस दिन को देव दीपावाली भी कहा जाता हैं।

कार्तिक के महीने मे श्री हरि मत्स्य अवतार मे रहते हैं। इसके पीछे की कथा का वर्णन इस प्रकार करा जाता है कि शंखासुर नामक एक असुर ब्रह्माजी से वेदो को चुराकर भाग रहा था। भागते वक्त सारे वेद उसके हाथो से छूटकर समुद्र में गिर गए थे। सारे देवताओं द्वारा भगवान विष्णु से प्रार्थना करने पर, भगवान विष्णु ने कहा कि मै स्वयं मछली की रूप धारण कर समुद्र से वेदों को लाता हूँ और मै अबसे पूरे कार्तिक महीने सभी वेदों के साथ जल मे ही रहूँगा। इसी कारण से इस महीने में मछलियाँ खाने से परहेज किया जाता है।

करवा चौथ, अहोई अष्टमी, धनतरेस, नरक चतुर्दशी, रमा एकादशी, लक्ष्मी पूजा, काली पूजा, गोवर्धन पूजा, छठ पूजा, भाई दूज, तुलसी विवाह यह सारे त्योहार कार्तिक महीने मे मनाया जाता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन देवी तुलसी ने पृथ्वी पर जन्म ग्रहण किया था। कार्तिक पूर्णिमा के दिन वैकुण्ठ के स्वामी श्री हरि को तुलसी अर्पण करते हैं। कार्तिक मास में कुछ प्रमुख कार्य अवश्य करना चाहिए, जैसे- नदी स्नान, दीप दान, व्रत, तुलसी-पूजा, दान, पूजा, शाकाहारी रहना इत्यादि। पुराणों के अनुसार जो व्यक्ति इस माह मे गंगा स्नान, दान तथा व्रत करते हैं, उनके पापों का अन्त होता है। कार्तिक मास में आकाश दीप का बहुत महत्व है।

गंगा स्नान मंत्र :

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदे सिंधु कावेरी जलेस्मिन सानिधिं कुरु।

दीप दान मंत्र :

शुभं करोति कल्याणम् आरोग्यम् धनसंपदा।
शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपकाय नमोऽस्तु ते॥
दीपो ज्योति परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दन:।

दीप दर्शन मंत्र :

शुभं करोति कल्याणं आरोग्यं धनसंपदा।
शत्रु बुद्धि विनाशय दिपकाया नमोस्तुते।
दीपो ज्योति परं ब्रह्मा दीपो ज्योतिजनार्धन।
दीपो हरतु मे मे पापं संध्या दीप नमोस्तुते।

कार्तिक मास भगवान विष्णु की पूजा के लिए सबसे खास माना गया है। साथ मे विष्णु प्रिय तुलसी की पूजा करना अच्छा मानते हैं। पूरे महीने तुलसी पौधे के नीचे घी का दीपक जलाया जाता है। कार्तिक-कथा को महात्या आदि सुनाते हैं, ऐसा करने से शुभ फलों की प्राप्ति होती है और पापों का नाश होता है। इस मास मे विशेषतः श्री राधा और श्री कृष्ण की पूजा की जाती है। कार्तिक महात्म्य का वर्णन करते हुए भगवान श्रीकृष्ण ने सत्यभामा को बताया था कि वह पूर्वजन्म में भगवान विष्णु की पूजा किया करती थीं। जीवन भर कार्तिक मास में सूर्योदय से पूर्व स्नान करके वह तुलसी को दीप दिखाती थीं। इस पुण्य से सत्यभामा श्रीकृष्ण की पत्नी हुईं। भगवान श्रीकृष्ण ने बताया कि कार्तिक का महीना सभी महीनों में मुझे अति प्रिय है। जो भी व्यक्ति इस महीने में अन्नदान, दीपदान करता है, उस पर कुबेर महाराज भी कृपा करते हैं।

"दक्षिण भारत के अद्भुत स्थल अरुणाचलम पर्वत जिसे अन्नामलाई, अरुणागिरि के नाम से जाना जाता है। इस स्थल को रमन महर्षि ने अपने तपस्थली के रूप मे चुना। इस जगह

पर कार्तिक पूर्णिमा की रात अरुणांचल पर्वत पर भगवान शिव की स्मृति में घी का दीपक जलाकर रोशनी की जाती है। इस त्योहार को कार्तिगयी दीपम कहा जाता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन श्रद्धालु नंगे पाँव अरुणांचल पर्वत की (14 किमी वृत्ताकार मार्ग) परिक्रमा करतें हैं । इस परिक्रमा को गिरी वलम कहा जाता है।"

स्कंद पुराण के अनुसार भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र कार्तिकेय ने तारकासुर का वध भी इसी मास में किया था, इसके लिए इस मास का नाम कार्तिक पड़ा । शास्त्रों मे कार्तिक मास को उत्तम मास बताया गया है। पद्म पुराण, नारद पुराण और स्कन्द में कार्तिक मास का विशेष महत्व बताया गया है। कार्तिक पुराण और भगवत गीता इस मास में पढ़ी जाती है। इस मास में की गयी प्रार्थना सीधे देवों तक पहुँचती है, इसलिए इसे मोक्ष का द्वार भी कहा गया है।

अनुराधा पटनायक
दामनजोड़ी

कार्तिक मास का महत्व

मासानां कार्तिक: श्रेष्ठो देवानां मधुसूदन।
तीर्थं नारायणाख्यं हि त्रितयं दुर्लभं कलौ॥

स्कंद पुराण में लिखे इस श्लोक के अनुसार, भगवान विष्णु एवं विष्णु तीर्थ के समान ही कार्तिक मास भी श्रेष्ठ और दुर्लभ है।

प्रत्येक वर्ष शरद पूर्णिमा के बाद से ही कार्तिक मास प्रारंभ हो जाता है, जिसको दामोदर मास भी कहा जाता है। जगत पालनहार श्रीहरि विष्णु को कार्तिक माह बेहद प्रिय है।

स्कंद पुराण में उल्लेखित कार्तिक महिमा का वर्णन करने वाला श्लोक-

न कार्तिकसमो मासो न कृतेन समं युगम्।
न वेदसदृशं शास्त्रं न तीर्थं गंगा समम्॥

इस श्लोक का अर्थ है जिस तरह सत्ययुग के समान कोई युग नहीं, वेद के समान कोई शास्त्र नहीं, गंगा जी के समान कोई तीर्थ नहीं, ठीक उसी तरह कार्तिक मास के समान कोई अन्य पावन मास नहीं ।

स्कंद पुराण के अनुसार, भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र कार्तिकेय ने तारकासुर का वध भी इसी माह में किया था, इसके लिए इसका नाम कार्तिक पड़ा।

पुराणों में इस महीने को जीवन के चारों लक्ष्य (पुरुषार्थ) - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करने के लिए कहा गया है । इस महीने का धार्मिक महत्व भगवान विष्णु ने ब्रह्मा को समझाया, जिन्होंने आगे नारद को और उनसे राजा पृथु को समझाया। कार्तिक मास वर्ष का एकमात्र ऐसा महीना है जब प्रत्येक चंद्र गतिविधि को उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

इस महीने देवउठानी एकादशी जिसे देव प्रबोधिनी एकादशी और देवोत्थान एकादशी भी कहा जाता है, मनायी जाती है॥ इस दिन चातुर्मास की समाप्ति यानि चार महीने की योग निद्रा के बाद श्रीहरि विष्णु जागते हैं और पूरी सृष्टि पर आनंद और कृपा बरसाते हैं और सारे शुभ व मांगलिक कार्यों की शुरुआत होती है। माँ लक्ष्मी भी इस महीने धरती का भ्रमण करती हैं और भक्तों को अपार धन का आशीर्वाद देती हैं ।

पूरे कार्तिक मास में स्नान, ब्राह्मण भोज, गाय दान, तुलसी दान, आंवला दान तथा अन्न दान और भगवत पूजन किया जाता है, जिससे भगवान विष्णु द्वारा अक्षय फल प्राप्त होता है। पुराणों के अनुसार इस मास में भगवान विष्णु नारायण रूप में जल में निवास करते हैं, इसलिए गंगा स्नान महत्वपूर्ण माना जाता है । इस महीने में दीपदान मंदिरों, नदियों में स्नान आदि का खास विधान है।

शास्त्रों में इससे जुड़ा एक श्लोक प्रचलित है, जिसमें बताया गया है कि कार्तिक स्नान के लिए तीर्थराज प्रयाग, अयोध्या, कुरुक्षेत्र तथा काशी को श्रेष्ठ माना जाता है, पर जो वहाँ जा नही पाते, इस श्लोक का स्मरण भी कर लें तो दोगुना लाभ मिलता है।

श्लोक-

'गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥

कार्तिक महीने में तुलसी की पूजा का खास महत्व है। भगवान विष्णु की प्रिया माता तुलसी का विवाह भगवान विष्णु के अवतार शालिग्राम से हुआ था। तुलसी पूजा से न केवल घर

के रोग, दु:ख दूर होते हैं बल्कि अर्थ, धर्म, काम तथा मोक्ष के साथ यमदूतों के भय से मुक्ति मिलती है।

स्नान के बाद तुलसी तथा सूर्य को जल अर्पित करते वक्त "महाप्रसाद जननी, सर्व सौभाग्यवर्धिनी, आधि व्याधि हरा नित्यं, तुलसी त्वं नमोस्तुते.." मंत्र का जप किया जाता है ।

पूरा माह तीज-त्योहारों के साथ बीतता है । त्योहारों में सबसे पहले गणेश चतुर्थी, करवा चौथ जो सुहागिन महिलाएँ अपने पति की लंबी उम्र के लिए निर्जला व्रत रखती है। रोहिणी व्रत जो खासतौर पर जैन धर्म के अनुयायी भगवान वासुपूज्य की होती है। माँ लक्ष्मी रमा के रूप मे रमा एकादशी पर भगवान विष्णु के साथ पूजा होती है। धनतेरस में माता लक्ष्मी के साथ भगवान धनवंतरी की पूजा होती है। नरक चतुर्दशी, काली चौदस पर माँ काली की विशेष उपासना नरकासुर का वध करने पर किया जाता है। कार्तिक अमावस्या या दिवाली मैं नया खाता खोला जाता और पटाखे जलाए जाते है।

भाई दूज, मे बहन अपने भाई की उज्ज्वल भविष्य और रक्षा की कामना करती है। गोवर्धन पूजा के दिन गोवर्धन पर्वत की पूजा का विधान है, साथ ही इस दिन अन्नकूट (56 भोग) (जिसका अर्थ है "भोजन का पहाड़") का श्रीकृष्ण को भोग लगाया जाता है। संतान की लंबी आयु के लिए छठ पूजा में 36 घंटे का निर्जला व्रत रखकर सूर्यदेव-छठी मईया की पूजा की जाती है। अक्षय (आंवला) नवमी में आंवले के वृक्ष में भगवान विष्णु और शिवजी का वास होता है पूजा की जाती है। साथी ही राधा नवमी पर के अवसर पर साक्षीगोपाल में राधाजी के पैरों के दर्शन किए जाते हैं।

देव दिवाली, मणिकर्णिका स्नान काशी में गंगा नदी के तट पर मनाई जाती है। मान्यता है कि इस दिन देवता काशी की भूमि पर आकर दिवाली मनाते हैं। कार्तिक पूर्णिमा हिंदू, सिख और जैन मनाते है।

दक्षिणी भारत में, कार्तिक पूर्णिमा को कार्तिकेय के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। यह दिन पितरों, मृत पूर्वजों को भी समर्पित है। सिख धर्म में, कार्तिक पूर्णिमा को प्रसिद्ध सिख उपदेशक गुरु नानक के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है।

यह महीना ओडिशा मैं "हबीशा", "बलूका पूजा", "पंचुका", "कार्तिका पूर्णिमा" और "बोइता बंधनो" जैसे कई पारंपरिक त्योहारों और अनुष्ठानों का पालन करते हैं। "बालुका पूजा" मैं भक्त भगवान जगन्नाथ की छवि के रूप में पवित्र तुलसी के पौधे की पूजा करते हैं। ओडिशा में विधवाओं और महिलाएँ आंशिक उपवास और पद्म पुराण से कार्तिका महात्य का पढ़ना शामिल है। बड़ी संख्या में तीर्थयात्री पुरी आते हैं और पूरे महीने दिन में केवल एक बार भोजन करते हैं, जिसे "हबीसा" कहते है।

कार्तिक मास के अंतिम पांच दिनों जिनहे "पंचुका" के रूप में जाना जाता है। उड़िया हिंदू मांसाहारी भोजन ग्रहण नहीं करते। कार्तिका पूर्णिमा के दिन भोर में प्रातः नदी, तालाब मे दीप के साथ नाव छोड़ने जाते है। मान्यता है की ओडिशा के व्यापारी अपना सामान - माल लेकर बाली देश जाते थे और ओडिशा या कलिंग के गौरवशाली अतीत का जश्न मनाने के लिए "बोइता बंधन" का अनुष्ठान करते हैं।

कार्तिक मास का वर्णन निम्न पक्तियों में प्रस्तुत है:

प्रातः गंगा स्नानम
विष्णु-तुलसी पूजनम
पदमा पुराण पठनम
शाकाहारी भोजनम
तीर्थ क्षेत्र भ्रमनम
प्रीति वन भोजनम
एतद कार्तिक मासम आचरनम

वी अनुराधा
दामनजोड़ी

बचपन

बचपन का वो दौर था,
जो अब पीछे छूट गया।
आँगन में फुदकते गौरेयों से,
खुद आँगन रूठ गया।

अमरूद के पेड़ों पर झूले थे,
उसकी टहनियाँ भी सुख गईं,
गोबर से निपे ज़मीन में,
अब घास ही घास उगई,
खेलने की आवाज़ें अब,
खामोशी में गुम हो गईं,
बचपन का ये हस्र देखकर,
आँखे नम़ हो गईं॥

दो कपड़े रोज़ के थे,
और दो त्योहारों के लिए,
आज़ आलमारी भरी है,
तो त्योहारों ने रौनक खो दिए।

जिस दिन खीर-पूरी बन जाए,
पढ़ाई में कहाँ मन लगे,
अब आलीशान होटलों में,
खाकर भी लगता है,
गए हों ठगे,
पंगत वाली भोज की जगह
अब बुफे हम-कदम हो गई
बचपन का ये हस्र देखकर,
आँखे नम़ हो गईं॥

स्कूल की नई किताबें,
गहनों से न थीं कम,
कवर चढ़ाने और नाम लिखने में,
दिन-रात रहते थे बेदम,
मोर पंख पीपल के पत्ते,
शोभा थीं किताबों की,
डिजीटल बुक वो सुख कहाँ देंगी
वो दुनिया ही थी ख्वाबों की
साथ मिलकर पढ़ने वाली प्रथा
ऑनलाइन पर अब थम गई
बचपन का ये हस्र देखकर,
आँखे नम़ हो गईं॥

स्वाति तिवारी
अनुगुळ

बहुत याद आती है.......

शहर की तपती धूप में सुकून नहीं,
गाँव के पेड़ों की छाँव
बहुत याद आती है।

वो गाँव के कच्चे रास्तों पर चलकर,
खेतो की हरियाली को देखना,
बहुत याद आती है।

शहर की भीड़ के बीच
बैचेनी सी लगती है,
गाँव के शांत वातावरण की
बहुत याद आती है।

दोस्तों के साथ
वो आम के बगीचे में खेलना
और पेड़ों की डाली में झूला झूलना,
बहुत याद आती है।
दीवाली और दुर्गापूजा
परदेश में मना तो लेते हैं हम
पर गाँव में सब के साथ
ये त्यौहार मनाने की
बहुत याद आती है।

प्रीति झा
अनुगुळ

Diwali: Life Lessons

When Lord Rama, Sita, and Lakshmana returned to Ayodhya after a 14-year absence, it was celebrated with the festival of lights i.e Diwali. Here are some life lessons we may take from Diwali because of how inspirational their lives are to all of us:

1. Diwali's true purpose is to expel the darkness from our souls. People burn lamps on this day to remove the darkness of the night which in true sense implies that we must embrace light in the form of positive vibes to let go of the darkness of negativity.

2. We clean our homes on Diwali to welcome the Goddess Lakshmi and in order to remove obstacles from our lives, we pray to Lord Ganesha. These obstacle in reality can be in the form of bad habits, the wrong kind of friends, rage, hatred, and jealousy that we all should try to detach ourselves from.

3. We present sweets to our friends, neighbours, and family members. This causes a great deal of excitement and celebration in the air. Similar to that, it urges us to give whatever we have to those who are less fortunate. It highlights the idea of deriving pleasure from giving.

4. On Diwali we purchase new clothes and utensils. We start afresh and make a new beginning. It also signifies it's never too late to start afresh.

5. Most importantly, Diwali signifies that the good will always triumph over the evil. So no matter how dire the situations are, we should all have patience and relentlessly choose good, things will become favourable eventually for sure.

Alaka Das
Bhubaneswar

Guru Nanak Dev Ji

(1469-1539)

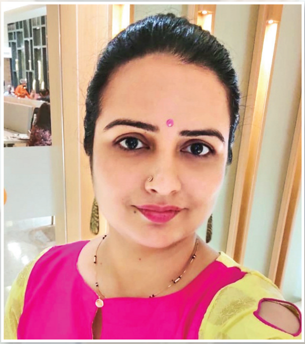

'Kam Krodh Mad Lobh Niharo

Chand Ah Santijana

Kahe Nanak Sha Suno Bhagvanta

Kya Jagme Nahi Koyi Apna'

Guru Nanak Dev Ji was the inspirational, great and first guru of Sikhism. He was a great preacher of religion. He was born on 15th April 1469 at Talwandi near Lahore, Pakistan. Guru Parv or Prakash Parv is celebrated on the birthday of Guru Nanak Dev Ji. He was intelligent and a critic. He learnt Punjabi, Hindi, Persian and Sanskrit at the age of fifteen. When he was a youth he found Hindus and Muslims quarelling each other for protection of their respective faiths. Guru Nanak Devji desired oneness of God for both Hindus and Muslims. He stood for their unity. He founded a new religion by blending the essential and fundamental precepts of both the religions. He expected simplicity and purity of life. Love and equality were the foundation of his religion which was later called Sikhism. The religion of Guru Nanak Devji was based on three principles. They are one God, Guru and muttering of prayers. In order to preach the new religion, he toured all over India and

went upto Mecca-Medina also. He taught people love and truth. Huge number of people were his followers. Wherever Guru Nanak ji had gone, the places now have become holy shrines for the Sikhs. After he travelled extensively for nearly twenty five years, Guruji settled in Kartarpur. His teachings were collected in the 'Guru Granth Sahib' the holy book of Sikhs. As a social reformer, Guru ji also worked to improve the condition of women, poor and downtrodden. His personality was so great that everyone used to get influenced by him. He always showed the right path to the people. Guru ji left for heavenly abode on 22 September 1539.

After Guruji, 9 other great Gurus took over this title. With the blessings of all Gurus, Sikhs are following the path given by the Gurus.

Shelly Rana
Bhubaneswar

Children's Day- a Teacher's Perspective

Children are indeed the beautiful and tender blossoms in the garden of life. Wherever they go, they spread the fragrance of their innocence and purity. And do you know that a teacher is infact the most blessed person on Earth. Surrounded by children, her life is filled with sheer happiness. For a teacher, everyday is Children's Day.

Every child in the school is a potential bundle of creative energy in the wings, getting ready to take to the centre stage of life, to play the assigned role to the optimum. The perfect nursery being the school, the right trainers and gardeners- the teachers perform their tasks of moulding the students well. Like a garden has a variety of flowers, demanding varying degrees of attention and nutrition, similarly, students come with individual differences. There are quick- learners, there are slow-learners. There are students who are voracious readers, there are reluctant children who need to be taken to books like taking horse to water, who cannot be made to drink it. Students with sunshine disposition and demeanour study alongwith pupils who stay perennially downcast and depressed. Its here the teacher steps in. Having shouldered the responsibility of the second parent of the students, she considers it her moral responsibility to reach out to all the students.

The gen-z, the millennials are a capable lot with multi-tasking as their forte. Persistent and consistent involvement of the teachers in the students' life would work wonders. Timely counselling, correct remediation and an array of enrichment activities would see students in good stead. Such an atmosphere would make students a happy tribe.

A walk down the memory lane brings me back to enriched lessons. The child weak in English works in the Indian Embassy at London today, the student failing in Science is a scholar whose thesis in Physics has been commended by the intelligentsia of a German University, yesterday's backbencher is today's prized poet rubbing shoulders with celebrated writers. These are but a few anecdotes. There is a flood of such achievers if one wishes to take stock of. Well, the bottomline is – every child has the potential to rise and shine. The noble pursuit named teaching is indeed very noble. For a teacher, every day is Children's Day.

Sujata Pani
Damanjodi

Importance of Farmers in the Modern Era

In the Present Scenario, when all countries of the world are struggling for the economic growth measuring in the terms of development, India is also striving hard to maintain its economic growth with a huge population and development challenges. But the fact to be realized here is that sustainability of Indian economy lies in its agricultural growth and the growth of the farmers – the backbone of the country. Today Agro- brain drain is a serious problem to Indian economy.

The current situation demands motivation of India's youth to take up farming. India, the country where farmers were the backbone of the country, now face situation, where we have to think of the problems of the farmers in grief. Being analytical over the issue, instead of thinking of methods to inspiring our youth to take up farming, it would be more heartening if lives of farmers are smoothened and consequently saving the country (which is agriculture-based) from this. This will happen only when we succeed to build the inner instinct in them or create a passion for their work. If we think deeply over this issue, this passion for their work can only be created /developed or maintained in them by acknowledging the real facts of life and by paying due regard and respect to them and for their work.

We cannot ignore the basic needs for the lives to sustain. The first and foremost is food, for this, agriculture sector has to be maintained and the fact is that we have to work with our hands manually for this. As this maintains an emotional balance between the worker and the field of work and this there develops a bondage between work and the worker. To develop this work culture, a sense of belongingness for the livelihood should be inculcated from the childhood itself.

When a child is made to understand the value of each grain that is produced by the farmers not only in terms of monetary cost-benefit analysis but also the labour inputed by the farmer for this and the physiological process that a plant undergoes to produce it. So cost of each grain should be calculated not only in terms of farmers labour or money but also by paying a sense of gratitude to the producers (the farmer and the plants).

The gratitude/ respect for the producers develop a sense of belongingness for their noble work.

Regard for their service would make them stronger enough to deal with the adverse situations Secondary things to promote this may be to set up an Indian Agriculture Service, to teach them to become firm entrepreneurs or hand holding by providing jobs Maximum Support Price (MSP) and Maximum Government incentives for those farmers.

Simply helping the distressed by digitalization or by providing robotic techniques for their work would never solve the problem but only will force them to leave their work and choose some other profession- the main cause of the great Indian agro brain drain. There should be a mutual respect for people who feed the country and countrymen who care for these people, without whom the entire nation will undergo starvation. Simply making money or doing some other job of high profile would not mean anything when life is at stake. So we all should think of the seriousness of the problem and start working on it. The farmers are indeed the backbone of the nation's economy. They need to be encouraged more and more emotionally and ethically in the larger interest of the country's progress.

Geetanjali Rath
Damamjodi

Farmers are the Backbone of the Modern World

In a world where the average person is disconnected from where their food comes from, it's more important than ever to highlight the importance of farmers. They are the backbone of our food system and play a vital role in ensuring that we have access to fresh, nutritious food. In a modern era where we are increasingly reliant on technology and processed foods, farmers provide a much-needed link to our food's origins.

1. Farmers are the backbone of the modern world.

The world would be a very different place without farmers. They provide us with the food we eat, the clothes we wear, and the materials we use to build our homes. Farmers are the backbone of the modern world.

Without farmers, we would have to find other ways to get our food. We might have to hunt and gather it as our ancestors did. Or we might have to rely on food that is grown in factories. Neither of these options is as good as the food we get from farmers.

Farmers also provide us with the materials we need to build our homes. Wood, straw, and stone are all materials that come from farms. Farmers also provide us with the wool that is used to make our clothes.

Without farmers, the world would be a very different place. They are the backbone of the modern world.

2. They provide us with food, clothing, and shelter.

Farmers play a vital role in our society. They provide us with food, clothing, and shelter. Without farmers, we would not be able to survive.

Farmers work hard to provide us with the necessities of life. They grow crops and raise animals to provide us with food. They also grow fiber crops to provide us with clothing. And they provide us with shelter by building houses and barns.

Without farmers, we would be lost. They are an essential part of our society.

3. They help us to live healthy and sustainable lives.

As the world becomes more and more industrialized, it is important to remember the importance of farmers in our lives. They provide us with the food we need to live healthy and sustainable lives.

Farmers who work hard to ensure that we have access to fresh, nutritious food. They use sustainable practices to protect the environment and our health. When we buy from farmers' markets or support local farmers, we are helping to create a healthier, more sustainable world.

By eating locally grown food, we are getting the best possible nutrition. Farmers use fresh, natural ingredients and grow their food without the use of harmful pesticides. This means that we are getting the most nutrient-rich food possible.

When we support farmers, we are also supporting our local economy. Farmers provide jobs and contribute to the vibrancy of our communities. When we buy locally, we are investing in our own communities and ensuring that farmers can continue to do the important work they do.

4. They are the caretakers of the land.

As the world population continues to grow, the demand for food will only increase. Farmers play a critical role in meeting this demand while also stewarding the land.

Farmers have to be careful stewards of the land because they rely on it for their livelihood. They need to maintain a delicate balance between producing enough food to support themselves and their families and not over-exploiting the land. This can be a difficult task, but it is one that farmers take seriously.

In addition to producing food, farmers also provide many other benefits to the land. They help to control erosion, manage pests and diseases, and protect water resources. Farmers are the caretakers of the land and play a vital role in keeping it healthy and productive.

5. They are the stewards of our environment.

As the world's population continues to grow, it is more important than ever that we take care of our environment. Farmers are the stewards of our environment, and it is their responsibility to ensure that the land is healthy and productive.

Farmers have a unique perspective on the environment, and they are in a position to make a real difference. They understand the importance of soil health, water conservation, and wildlife habitat. And they are on the frontline of climate change, dealing with the impacts of extreme weather and drought.

Farmers are making a difference, and they are leading the way in sustainable agriculture. By using innovative practices and technologies, they are reducing their impact on the environment. And they are sharing their knowledge with other farmers so that we all can do our part to protect our planet.

6. They are the keepers of our traditions.

In a world that is increasingly globalized and modernised, it is more important than ever to preserve our traditions. And who is better to be the keepers of our traditions than farmers?

Farmers have been keeping our traditions alive for centuries. They know the importance of maintaining the integrity of our food supply and our way of life. They understand that our traditions are what make us unique and special.

And so, as we celebrate the traditions of our past, let us also give thanks to the farmers who keep them alive. They are the true keepers of our traditions.

7. They are the foundation of our economy.

Farmers are the backbone of our economy. They provide the food that we eat, the clothing that we wear, and the fuel that powers our homes and businesses.

Without farmers, our economy would collapse. That's why it's so important to support our farmers and make sure they have the resources they need to succeed.

Next time when you're at the grocery store, think about where your food comes from and how important farmers are to our economy. Then, be sure to thank a farmer for all they do.

8. They are the heart of our communities. They work tirelessly to care for their crops and animals, and to provide us with the products we need to live.

Without farmers, our communities would be greatly diminished. They are the backbone of our society, and we owe them a great deal of gratitude. We must do everything we can to support them, and to ensure that their hard work continues to benefit us all.

Conclusion:

Farmers are some of the most important people in the world. They provide us with food, clothing, and shelter. They help us to live healthy and sustainable lives. And they are the caretakers of the land. We should do everything we can to support them.

Meenakshee Choudhury

Bhubaneswar

ଏକ ଦୀପାବଳୀ ସମ୍ପର୍କରେ

ରେନ୍‌ବୋ ଆପାର୍ଟମେଣ୍ଟ ଲେଡିଜ କ୍ଲବର ନୂଆ ପ୍ରେସିଡେଣ୍ଟ ମିସେସ ରୁଦ୍ରାଣୀ ପାଢ଼ୀଙ୍କ ଆଖିକୁ ନିଦ ନାହିଁ। ସପ୍ତାହକ ପରେ ଦୀପାବଳୀ ଅମାବାସ୍ୟା। ପ୍ରି ଦିବାଲୀ ସେଲିବ୍ରେସନଟା କ୍ଲବରେ ଯେମିତିହେଲେ ଖୁବ ଜୋରଦାରରେ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ। ଆପାର୍ଟମେଣ୍ଟକୁ ଆସିବା ମାତ୍ର ପାଞ୍ଚମାସ ହେଇଛି। ସେଥିରେ ପୁଣି ଇଲେକ୍ସନ ଲଢ଼ି ପ୍ରେସିଡେଣ୍ଟ୍ ପଦ ପାଇଁ ନିର୍ବାଚିତ ହେଇଛନ୍ତି। ପ୍ରେସିଡେଣ୍ଟ୍ ହେଲାପରେ ଏଇଟି ତାଙ୍କର ପ୍ରଥମ ପ୍ରୋଗ୍ରାମ । ଏଣୁ ଏହି ଉତ୍ସବଟିକୁ ଭଲଭାବରେ କରି ତାଙ୍କର ଟ୍ୟାଲେଣ୍ଟକୁ ନିହାତି ଭାବରେ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଦେଖେଇବାକୁ ପଡ଼ିବ। ପୂର୍ବ ପ୍ରେସିଡେଣ୍ଟ ଶୋଭନା ମିଶ୍ର, ରୁଦ୍ରାଣୀଙ୍କର ଏତେ ଶୀଘ୍ର ପ୍ରେସିଡେଣ୍ଟ୍ ହେଇଯିବାକୁ ଯେମିତି ଗ୍ରହଣ କରି ପାରୁ ନ ଥିଲେ। ତାଙ୍କର କିଛି ନେଗେଟିଭ ମନ୍ତବ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହା ଭିତରେ କେଇଜଣ ଚୁଗୁଲିଖୋର ସଭ୍ୟାମାନଙ୍କ ମାଧ୍ୟମରେ ଆସି ରୁଦ୍ରାଣୀଙ୍କ କାନରେ ପଡ଼ିସାରିଥିଲା। ଏଣୁ ନିଶ୍ଚିତ ଭାବରେ ତାଙ୍କୁ ଆଗରୁ ହେଇଥିବା ପ୍ରି ଦିବାଲୀ ପ୍ରୋଗ୍ରାମଠାରୁ ଏବର୍ଷର ପ୍ରୋଗ୍ରାମକୁ ଅଧିକ ଭଲ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ। ସଭ୍ୟାମାନଙ୍କଠାରୁ ପ୍ରି ଦିବାଲୀ କିପରି ସେଲିବ୍ରେସନ ହେଉଥିଲା ବୁଝି ତା ଅପେକ୍ଷା ଆହୁରି ଭଲ କରିବାକୁ ସେ ରାତିଦିନ ଏକାକାର କରିଦେଇଥିଲେ ଯେମିତି। ତିନି ତିନିଥର ମିଟିଂ କରି ପ୍ରୋଗ୍ରାମର ଆଜେଣ୍ଡା ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିଛନ୍ତି। ସଭ୍ୟାମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଦାୟିତ୍ୱ ବଣ୍ଟନ କଲେ ମଧ୍ୟ ସବୁକାମ ଠିକ୍‌ରେ ହେଉଛି କି ନାହିଁ ନିଜେ ତଦାରଖ କରୁଛନ୍ତି।

ଟେଣ୍ଟ୍ ହାଉସ୍‌ଠାରୁ ଆରମ୍ଭ କରି କ୍ୟାଟରିଂ ଯାଏଁ ସବୁ ଯୋଗାଡ଼ ହେଇ ସାରିଲାଣି। କ୍ଲବର ବଜେଟକୁ ଆଖିରେ ରଖି ଡିଜେବାଲା ସାଙ୍ଗରେ ଝିକଝାକ ହେଇ ଅଳ୍ପଟଙ୍କାରେ ତାକୁ ରାଜି କରେଇଛନ୍ତି। ସବୁ କାମ ସୁରୁଖୁରୁରେ ଆଗେଇ ଚାଲିଛି। ଖାଲି ବାକି ରହିଛି ବାଣ ଓ ଦୀପ କଥା। ବାଣ ତ ସେ ତାଙ୍କସମ୍ପର୍କୀୟ ହୋଲସେଲ ଡିଲରଙ୍କଠାରୁ ଅଳ୍ପ ଦାମରେ ଆଣିବେ ବୋଲି ଡିସାଇଡ କରିଛନ୍ତି। ତାଛଡ଼ା ସଭ୍ୟାମାନେ ମିଶି ନିଷ୍ପତ୍ତି ନେଇଛନ୍ତି ଯେ ପରମ୍ପରା ରକ୍ଷା କରିବାକୁ ଯାଇ ଅଳ୍ପ କେତୋଟି ଦୀପ ଲଗେଇ ଅନ୍ୟ ସବୁ ସ୍ଥାନ କ୍ୟାଣ୍ଡେଲରେ ସଜେଇବେ। ଦୀପ ଲଗେଇଲେ ଅଡୁଆ। ତେଲ ଦେଇ ବାରମ୍ବାର ତେଜିବାକୁ ପଡ଼ିବ। ଏ ବେକାର କାମ କରିବ କିଏ। ଶାଢ଼ୀପଟାରେ ବି ତେଲ ଲାଗିଯିବାର ଭୟ ଅଛି। କ୍ୟାଣ୍ଡେଲ ଆଣିବା ଦାୟିତ୍ୱ ରୁଦ୍ରାଣୀ ନେଇଛନ୍ତି।

ପ୍ରୋଗ୍ରାମ ଦିନ ସକାଳୁ ସଭ୍ୟାମାନେ ରଙ୍ଗୋଲି କରି ଅନ୍ୟ ସବୁକଥା ବୁଝାବୁଝି କରି ଫେରିଲାବେଳକୁ ରୁଦ୍ରାଣୀ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ପାଖକୁ ଡାକି କହିଲେ- ଭଉଣୀମାନେ, ଅପରାହ୍ନ ଚାରିଟା ସୁଦ୍ଧା ଆସି ସମସ୍ତେ କ୍ଲବରେ ପହଞ୍ଚିଯିବ। ଶୀତ ଦିନ । ଶୀଘ୍ର ଅନ୍ଧାର ହେଇ ଯାଉଛି।

ସବୁ କାମ ତ ସରିଛି। କେବଳ କ୍ୟାଣ୍ଡେଲ ଲଗେଇବା କଥା। ଏତେ ଶୀଘ୍ର ଆସିବା କ'ଣ ଦରକାର ବୋଲି ସମସ୍ତଙ୍କ ମନରେ ଉଠୁ ଥିବା ପ୍ରଶ୍ନକୁ ପଢ଼ିପାରି ମୁରୁକି ହସି ରୁଦ୍ରାଣୀ କହିଲେ- ସମସ୍ତେ ଠିକ ସମୟରେ ଆସ । ବଳେ ସବୁ ବୁଝିଯିବ।

ସମୟ ଚାରିଟା। ସଜବାଜ ହୋଇ କ୍ଲବ ପାଖରେ ସମସ୍ତେ ହାଜର। ସବୁରି ମୁହଁରେ ଖୁସିର ଝଲକ। ଏଇ ସମୟରେ ଦୁଇଜଣ ଲୋକ ରୁଦ୍ରାଣୀଙ୍କ ଘରୁ ଏକ ବିରାଟ କାର୍ଟୁନ ଆଣି ସାମ୍ନାରେ ରଖିଲେ। କୌତୁହଳ ବଢ଼ୁଥିଲା ସଭ୍ୟାମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ। କାର୍ଟୁନ କ'ଣ ପାଇଁ। ପ୍ରେସିଡେଣ୍ଟ ମ୍ୟାମ୍ ବୋଧେ କିଛି ସରପ୍ରାଇଜ ଗିଫ୍ଟ ଦେବେ! ଦିଅନ୍ତୁ। ଭଲ ତ। ସେମାନେ ଯେ ଏତେ ପରିଶ୍ରମ କରିଛନ୍ତି ଏ ପ୍ରୋଗ୍ରାମ ପାଇଁ।

ରୁଦ୍ରାଣୀ ମ୍ୟାମ ଧୀରେ ଧୀରେ ଯାଇ ପେଟି ଖୋଲି ସବୁ ସଭ୍ୟାମାନଙ୍କୁ ପାଖକୁ ଡାକିଲେ। ସମସ୍ତଙ୍କ ଦୃଷ୍ଟି ପଡ଼ିଲା କାର୍ଟୁନ ଭିତରେ। ଏ କଣ। ଏତେ ସବୁ ଦୀପ, ଜଡ଼ା ତେଲ ଆଉ ସଳିତା।

-ଆରେ ଏ କ'ଣ କଲ ରୁଦ୍ରାଣୀ। କ୍ୟାଣ୍ଡେଲ ଲଗେଇବାକୁ ଡିସାଇଡ୍ ହେଇଥିଲା ପରା। ଦୀପ ଧନ୍ଦା କରିବ କିଏ ?

ସାମାନ୍ୟ ଅସନ୍ତୁଷ୍ଟ ହୋଇ କହିଲେ ପୁରାତନ ପ୍ରେସିଡେଣ୍ଟ ତଥା ବୟୋଜ୍ୟେଷ୍ଠା ଶୋଭନା ମିଶ୍ର ମ୍ୟାମ୍।

ତାଙ୍କୁ ସମର୍ଥନ କରି ଏକ ଚାପା ଗୁଞ୍ଜରଣ ଖେଳିଗଲା ସେ ସ୍ଥାନରେ।

- କ'ଣ କରିବି କୁହ। କାଲି ସନ୍ଧ୍ୟାରେ ଯେତେବେଳେ କ୍ୟାଣ୍ଡେଲ କିଣିବାକୁ ଯାଏ ତ ଦେଖିଲି ପିଲାଟିଏ ଗଛ ମୂଳରେ ଦୀପଗୁଡ଼ିଏ ଧରି ବସିଛି। କେହି ଜଣେ ହେଲେ ଗରାଖ ନାହାନ୍ତି। ବିଚରା ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଆକୁଳ ହେଇ ଦୀପ କିଣିବାକୁ କହୁଥାଏ। କିଏ ଟିକିଏ ଚାହିଁ ପଳେଇ ଯାଉଥାଏ ତ କିଏ ମୂଲଚାଲ କରି ଫେରିଯାଉଥାଏ। କାହିଁକି କେଜାଣି ତା ପାଖକୁ ଆପେ ଟାଣି ହେଇଗଲି। କଙ୍କାଳ ଦେହରେ ଛିଣ୍ଡା ମଇଳା ଗଞ୍ଜିଟିଏ। ମତେ ଦେଖି ତା ଆଖିରେ ଚମକ ଖେଳିଗଲା। ରାତି ହେଇଯିବ ବୋଲି ତରତର ହେଉଥାଏ। ନେହୁରା ହେଇ କହିଲା ମା' କୋଡ଼ିଏ ଟଙ୍କାରେ ଆଠଟା ଦୀପ। ହେଲେ ବେଳ ହେଇଗଲାଣି। ବିକ୍ରି ହେଉଛି। ଆପଣଙ୍କୁ ଦଶଟା ଦେବି।

ମନ ତରଳିଗଲା। ପାଠ ପଢୁନୁ କି? ଦୀପ ବିକି ଆସୁଛୁ ବୋଲି ପଚାରିଲାରୁ ଓଦା କଣ୍ଠରେ କହିଲା

– ମ୍ୟାମ୍ ମୁଁ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରରେ ଚତୁର୍ଥ ଶ୍ରେଣୀରେ ପଢୁଛି । ମା' ଦୀପ ବିକିବାକୁ ଆସିଥାନ୍ତା । ହେଲେ ତାଙ୍କୁ ଜର । ସେଇଥିପାଇଁ ମୁଁ ଆସିଛି ।

– ଆଉ ବାପା । ସେ ନ ଆସି ତତେ କ'ଣ ପାଇଁ ପଠେଇଛନ୍ତି ?

– ବାପା ନାହାନ୍ତି । ସେ ଥିଲେ ମୁଁ ବା କାହିଁକି ଆସିଥାନ୍ତି ? ଗତ ବର୍ଷ କରୋନାରେ ସେ ଚାଲିଗଲେ । ଦିବର୍ଷ ହେଲାଣି କରୋନା ପାଇଁ ବେଉସା ନାହିଁ । ପୁଣି ଚାଇନା ଲାଇଟ୍‌କୁ ଲୋକମାନେ ଅଧିକ ପସନ୍ଦ କରୁଛନ୍ତି । ଏବର୍ଷ ମା' ପନ୍ଦରଶହ ଦୀପ ବନେଇଥିଲା । ମାତ୍ର ତିନିଶହ ଦୀପ ବିକ୍ରି ହେଇଛି । ଆହୁରି ଗୁଡ଼ିଏ ଦୀପ ବଳି ପଡ଼ିଛି ବୋଲି ମା ଖାଲି କାନ୍ଦୁଛି ।

ମନରେ ଦୟା ଆସିଲା ତାଙ୍କୁ ଗାଡ଼ିରେ ବସେଇ ତା ଘରକୁ ଗଲି । ନୁଆଁଣିଆ ଚାଳଘର । ଦାରିଦ୍ର୍ୟତାର ଚିହ୍ନ ସୁସ୍ପଷ୍ଟ । କତରା ଲଗା ହେଇ ଶୋଇଥାନ୍ତି ମହିଳା ଜଣେ । ପାଖରେ ନୁଖୁରି ମୁଣ୍ଡି କୁନି ଝିଅ ଟିଏ ବ୍ରେଡ୍ ଖଣ୍ଡିଏ ଧରି ବସିଥାଏ । ମତେ ଦେଖି ବହୁ କଷ୍ଟରେ ଉଠି ବସିଲେ ମହିଳା ଜଣକ । ସାମାନ୍ୟ କଥାବାର୍ତ୍ତା ହେଲାପରେ ତାଙ୍କୁ ଉଚିତ ମୂଲ୍ୟ ଦେଇ ସବୁତକ ଦୀପ କିଣି ନେବି ବୋଲି କହିଲି । ବିଶ୍ୱାସ କରି ପାରୁ ନ ଥିଲେ ସେ । ଟଙ୍କା ଦେଇ ଦୀପ ସବୁକୁ ନେଇ ଡିକିରେ ରଖିବାକୁ ଡ୍ରାଇଭରକୁ କହିଲାବେଳକୁ ମହିଳାଙ୍କ ଆଖିରୁ ଧାର ଧାର ହୋଇ ବୋହିଯାଉଥିଲା ଲୁହ । ପିଲାଟି ଆଖିରେ କୃତଜ୍ଞତାର ଭାବ ।

ଏବର୍ଷ କ୍ଲବର ପ୍ରି ଦିବାଲୀ ଫଙ୍କସନରେ କ୍ୟାଣ୍ଡେଲ ନ ଲଗେଇ ବିଶ୍ୱଶାନ୍ତି ପାଇଁ କାମନା କରି ହଜାରେ ଆଠ ଦୀପ ଲଗେଇବା ପାଇଁ ଆପଣମାନଙ୍କ ସହଯୋଗ ଲୋଡୁଛି । ତାଛଡ଼ା ବଳକା ଦୀପ ସବୁକୁ ଯେଉଁମାନଙ୍କର ଦରକାର ଅଛି ଟଙ୍କା ଦେଇ ନିଜ ନିଜ ଘର ପାଇଁ କିଣି ନେବାକୁ ଅନୁରୋଧ କରୁଛି । ତୁମ ମାନଙ୍କର ମତ ନ ନେଇ ଏପରି ଏକ ନିଷ୍ପତ୍ତି ନେଇଥିବାରୁ କ୍ଷମା ମଧ୍ୟ ମାଗୁଛି ।

ସଭ୍ୟାମାନେ ଏକ ସାଙ୍ଗରେ ତାଳିମାରି ତାଙ୍କୁ ସମର୍ଥନ ଜଣାଉଥିଲାବେଳେ ଶୋଭନା ମ୍ୟାମ୍, ରୁଦ୍ରାଣୀ ମ୍ୟାମ୍‌ଙ୍କ ପାଖକୁ ଲାଗି ଆସିଲେ । ଏକ ବିସ୍ଫୋରଣ ଅପେକ୍ଷାରେ ସମସ୍ତେ । ହେଲେ ଘଟିଲା ଅନ୍ୟ କିଛି ।

– ତୁମେ ମୋଠାରୁ ଆହୁରି ଭଲ ଭାବରେ କ୍ଲବର ଦାୟିତ୍ୱ ନେଇ ପାରିବ ବୋଲି ଏବେ ମୋର ବିଶ୍ୱାସ ହେଲା ରୁଦ୍ରାଣୀ । ବିନା ସ୍ୱାର୍ଥରେ ପୁଣି ବିନା ଅହଂରେ ସାମୂହିକ ଭାବରେ କାମ କରିବା ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ । ଏତିକି କହି ରୁଦ୍ରାଣୀ ମ୍ୟାମଙ୍କୁ କୁଣ୍ଢେଇ ପକେଇଲେ ସେ ।

ସେଥର ପ୍ରି ଦିବାଲି ଫଙ୍କସନକୁ ଏକ ନିଆରା ଖୁସିରେ ରେନ୍‌ବୋ ଆପାର୍ଟମେଣ୍ଟର ଲେଡିଜ୍ କ୍ଲବ ସଭ୍ୟାମାନେ ପାଳିଥିଲେ ।

ମମତା ଆଚାର୍ଯ୍ୟ
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ଜେଜେମା'ଙ୍କ କାର୍ତ୍ତିକ ମାସ

କାର୍ତ୍ତିକ ମାସ ଆସିବାର ମାସେ ଆଗରୁ ଜେଜେମା' ଦିନ ଗଣିବା ଆରମ୍ଭ କରିଦିଅନ୍ତି । ମହାଳୟା ଆସିଲେ ପିତୃପୁରୁଷଙ୍କୁ ପିଣ୍ଡଦାନ ଦିଅନ୍ତି ବାପା । ତା ପରଦିନଠାରୁ ଜେଜେମା'ଙ୍କର ନବରାତ୍ର ପୂଜା ଚାଲେ । ଦିନସାରା କେତେ ନିଷ୍ଠାରେ ଫଳାହାର କରି ଦେବୀ ସ୍ତୋତ୍ର ପାଠ କରୁଥାନ୍ତି । ଦିନରାତି ଅଖଣ୍ଡ ଦୀପ ଜଳୁଥାଏ । ଘରର ପରିବେଶ ପୁରାପୁରି ଅଲଗା ଲାଗେ ରୂପାକୁ । ଧିରେ ଧିରେ ବଡ଼ ହେଲା ପରେ ମାଆ ଦୁର୍ଗାଙ୍କ ପ୍ରତି ତା'ର ଭକ୍ତିଭାବ ବଢ଼ିଚାଲିଲା । ଜେଜେମା' ପୂଜା କରନ୍ତି, ମାଆ ତାଙ୍କୁ ସବୁ ଯୋଗେଇ ଦିଅନ୍ତି । ରାତିସାରା ସମସ୍ତେ ଦୀପକୁ ମଝିରେ ମଝିରେ ଦେଖି ଆସନ୍ତି । ଅଖଣ୍ଡ ଦୀପ ଏମିତି ଜଳୁଥାଇ ମା'ଙ୍କ ଆଶୀର୍ବାଦ ରୂପରେ ।

ତାପରେ ଜେଜେମା' ତାଙ୍କ ବ୍ୟାଗପତ୍ର ପାନବଟା ସବୁ ସଜାସଜି କରିବା ଆରମ୍ଭ କରି ଦିଅନ୍ତି । ତାଙ୍କୁ ଦେଖି ରୂପାକୁ ଲାଗେ ଯେ କାର୍ତ୍ତିକମାସ ଆସିଗଲା ପରା । ଜେଜେମା' ପୁରୀ ଯିବେ ହବିଷ କରିବା ପାଇଁ । ବାପା, ମାଆ, ରୂପା ଆଉ ସାନ ଭାଇ ରାଜା ସମସ୍ତେ ମିଶି ଟ୍ରେନ୍‌ରେ ଜେଜେମା'ଙ୍କୁ ପୁରୀ ଛାଡ଼ିବାକୁ ଯାଆନ୍ତି । ବାପା ତାଙ୍କ ସାଙ୍ଗଙ୍କୁ କହି ଗୋଟିଏ ଭଡ଼ାଘର ଜେଜେମା'ଙ୍କ ପାଇଁ ପୁରୀରେ ବୁଝି ଦେଇଥାନ୍ତି । ସେଇଠି ତାଙ୍କୁ ଛାଡ଼ି ଆସନ୍ତି । ଜଣଙ୍କୁ ବାପା ଠିକ୍ କରି ଦିଅନ୍ତି ସେ ଜେଜେମା'ଙ୍କୁ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ମହାପ୍ରସାଦ ସବୁଦିନ ଆଣି ଦିଅନ୍ତି । ତା ପରେ ବାପା ମଝିରେ ମଝିରେ ଯାଇ ଜେଜେମା'ଙ୍କୁ ଦେଖାକରି ତାଙ୍କ ସୁବିଧା ଅସୁବିଧା ବୁଝି ଆସନ୍ତି । ଏମିତି ପୁରୀକୁ ଜେଜେମା' ପ୍ରତିବର୍ଷ ହବିଷ କରିବାକୁ ଯାଆନ୍ତି । ଆଉ କାର୍ତ୍ତିକ ପୂର୍ଣ୍ଣମୀ ପରଦିନ ବାପା ଯାଇ ତାଙ୍କୁ ନେଇ ଆସନ୍ତି । ଜେଜେମା' ଆସି ପହଞ୍ଚିଗଲେ ରୂପା ଓ ରାଜା ବହୁତ ଖୁସି ହୋଇଯାଆନ୍ତି । ତାଙ୍କ ଆଗରେ ଜେଜେମା' କେତେ କଥା କୁହନ୍ତି । କେମିତି ତାଙ୍କ ସାଙ୍ଗମାନଙ୍କ ସହ ଭୋରରୁ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ଶ୍ରୀମନ୍ଦିର

ଯାଆନ୍ତି । ଆଉ ପୂର୍ଣ୍ଣମୀ ଦିନ ଭୋର୍‌ରୁ ଯାଇ ନରେନ୍ଦ୍ର ପୁଷ୍କରିଣୀରେ ଡଙ୍ଗା ଭସାନ୍ତି ଶୀତରେ ଥରିଥରି । ଆସିଲା ଦିନ ରୂପା ପାଇଁ ମାଳି ଆଉ ରାଜା ପାଇଁ ମୁଣ୍ଡହଲା ହାତୀ ଖେଳନା ନେଇ ଆସନ୍ତି । ମାଆ ପାଇଁ ମହାପ୍ରସାଦ ଆଣନ୍ତି । ମାଆ ମହାପ୍ରସାଦ ପାଇ ବହୁତ ଖୁସି ହୁଏ । ଶୋଇବା ବେଳେ ଜେଜେମା'ଙ୍କ ପାଖରୁ ରୂପା ଓ ରାଜା ଗପ ଶୁଣନ୍ତି । ପୁରାଣ ଗପ ଜେଜେମା' ତାଙ୍କୁ ଶୁଣାନ୍ତି । ଜେଜେମା'ଙ୍କ ପାଖରେ ଗପର ଅସରନ୍ତି ଭଣ୍ଡାର ଥାଏ । ଜମା ସରେନି ଯେମିତି...

ଧିରେ ଧିରେ ସମୟ ଗଡ଼ି ଚାଲିଲା, ଜେଜେମା' କାର୍ତ୍ତିକମାସ ହେଲେ ପୁରୀ ଯାଇ ପାରନ୍ତିନି ଏବେ । ଘରେ ରହି କାର୍ତ୍ତିକ ବ୍ରତ କରନ୍ତି । ସକାଳ ସାରା ପୂଜାପାଠ ଆଉ କାର୍ତ୍ତିକ ମାହାତ୍ମ୍ୟ ବହି ପଢ଼ନ୍ତି । ଖରାବେଳେ ପାଖ ମନ୍ଦିରରୁ ପ୍ରସାଦ ଆସେ । ରୂପା ଓ ରାଜା ଚାହିଁ ରହିଥାନ୍ତି । ଜେଜେମା' ଖାଇ ବସିଲେ ତାଙ୍କୁ ବି ଟିକେ ଟିକେ ପ୍ରସାଦ ମିଳେ । ଦିନେ ଜେଜେମା' ନିଜ ହାତରେ ମୁଗ ଡାଲମା କରନ୍ତି, କଞ୍ଚା କଦଳୀ ଆଉ ଓଉ ପକା ଡାଲମା ବହୁତ ବଢ଼ିଆ ଲାଗେ ରୂପାକୁ । ତା ପରେ ପଞ୍ଚୁକ ଆସିଯାଏ, ଜେଜେମା', ମାଆ ସମସ୍ତେ ଭୋର୍‌ରୁ ଗାଧୋଇ ପୂଜା କରନ୍ତି । ଚଉରାରେ ସୁନ୍ଦର ସୁନ୍ଦର ଚିତା ପକାନ୍ତି । ରୂପାର ଛୁଟି ଥିଲେ ସେ ଦିନେ ଦିନେ ଗାଧୋଇ ପଡ଼ି ଚିତା ପକାଏ । ମୁରୁଜ ପକାଇବାରେ ତାର ବହୁତ ଆଗ୍ରହ ଥାଏ । ସବୁ ପ୍ରକାର ଫଳ, ଗଜାମୁଗ, ଗଜାବୁଟ, ତାଳଗଜା ସବୁ ପଡ଼ି ଭୋଗ ଠାକୁରଙ୍କୁ ଦିଆଯାଏ । ତାପରେ କାର୍ତ୍ତିକ ପୂର୍ଣ୍ଣିମା ଆସେ । ବାପା ରାତିରେ ରଙ୍ଗ ବେରଙ୍ଗର ଡଙ୍ଗା ଆଣନ୍ତି । କିନ୍ତୁ ଜେଜେମା' କଦଳୀ ପାଟୁକା ଡଙ୍ଗା ଭସାନ୍ତି । ମାଆ ସାଇ ପଡ଼ିଶାରୁ କଦଳୀ ପାଟୁକା ଡଙ୍ଗା ତା ପାଇଁ ଓ ଜେଜେମା'ଙ୍କ ପାଇଁ ଯୋଗାଡ଼ କରିଥାଏ । ରାତିରୁ ଖଡ଼ିକାରେ ତୁଳା ଗୁଡ଼ା ବତୀ ମାଆ ସଜ କରିଦିଏ । ଅରୁଆ ଚାଉଳ, ପାନ, ପଇସା, ଫୁଲ ଆଉ ବତୀ ଲଗେଇ ସମସ୍ତେ ଭୋରରୁ ଭସାଇଦେଉ ଡଙ୍ଗାକୁ । ତା ପରେ ମନ୍ଦିର ଦର୍ଶନ କରି ପ୍ରସାଦ ପାଇ କାର୍ତ୍ତିକ ପୂର୍ଣ୍ଣମୀ ସରିଯାଏ ।

ଆଜି ଆଉ ଜେଜେମା' ନାହାନ୍ତି । କାର୍ତ୍ତିକ ମାସ ଆସୁଚି ଓ ଯାଉଚି । ଜେଜେମା' ବହୁତ ମନେପଡ଼ନ୍ତି । ରୂପା ବାହା ସାହା ହୋଇ ଶାଶୁଘରେ ସଂସାର କଲାଣି । ଜେଜେମା'ଙ୍କ ହାତ ତିଆରି ସେ ମୁଗଡାଲିର ବାସ୍ନାକୁ ସେ ଭୁଲି ପାରୁନି । ଯେତେ କଲେ ବି ସେମିତିକା ବାସ୍ନା ଓ ସ୍ୱାଦ ତାକୁ ମିଳୁନି ।

ସୀମା ମିଶ୍ର
ଦାମନଯୋଡ଼ି

କାର୍ତ୍ତିକ ମାସ

ଆଶ୍ୱିନ ହୋଇଲା ଶେଷ
ଶିଶିରେ ଶିଶିରେ ହୋଇଲା ପ୍ରବେଶ
ଏ ମହା କାର୍ତ୍ତିକ ମାସ
ରାଇ ଦାମୋଦର ହେବେ ବେଶ ।୧

କାର୍ତ୍ତିକ ମାସର ବୁଢ଼
ହବିଷ୍ୟାଳୀ କଲେ ଆମିଷ ଛାଡ
ପାହାନ୍ତି ପହରୁ ହେଲା ଗହଳ
ନଈ, ପୋଖରୀରେ ଜମେ ଭିଡ଼ ।୨

ପୟାଶ୍ରାଦ୍ଧ ଦୀପଦାନ
ପିତୃ ପୁରୁଷଙ୍କ ହରଷ ମନ
ଶ୍ରୀ ରାମଚନ୍ଦ୍ରଙ୍କ ବିଜୟାଗମନେ
ଦୀପାବଳିରେ ଫୁଟଇ ବାଣ ।୩

କାର୍ତ୍ତିକର ସୋମବାର
ସବୁ ବାର ମଧ୍ୟେ ଅଟଇ ସାର
ଜଳ ଢାଳି ଶିବ ଦରଶନେ ମିଳେ
ମନ ବାଞ୍ଛିଥିବା ଯାହା ବର ।୪

ଅନ୍ଧାର ବିନାଶ ପାଇଁ
ଆଲାକର ଜ୍ୟୋତି ଦିଅନ୍ତି ବିଛାଇ
ଜଗତ ଜନନୀ ହୁଅନ୍ତି ପ୍ରକଟ
ମହାକାଳୀ ରୂପ ନେଇ ।୫

ତୁଳସୀ ଚଉରା ପାଶେ
ସଞ୍ଜରେ ଆକାଶ ଦୀପଟି ଦିଶେ
ପଞ୍ଚ ମୁରୁଜର ନାନାଦି ଝୋଟିରେ
ବାଲୁକା ପୂଜନ୍ତି ହୋଇ ହରଷେ ।୬

ପଞ୍ଚୁକର ପାଞ୍ଚଦିନ
ବକ ପକ୍ଷୀ ବି ତ୍ୟଜଇ ମୀନ
ଭକତି ମନରେ ରାଧା ମାଧବଙ୍କୁ
ଭକ୍ତେ ଭଜୁଥାନ୍ତି ରାତି ଦିନ ।୭

ମିଳିଥାଏ କୋଟି ପୁଣ୍ୟ
ପାନ, ଗୁଆ, ଧାନ ଶସ୍ୟ ଥୋଇଣ
ଆକାମାବୈ ଗୀତ ଗାଇ ଗାଇ
କାର୍ତ୍ତିକ ପୂନେଇ ଡଙ୍ଗା ଭସାଣ ।୮

ବରଷକ ବାରମାସ
ଧରମ ମାସ ବୋଲି ହୋଇଛି ଖ୍ୟାତ
ନାମ ସଙ୍କୀର୍ତ୍ତନ ମନରେ ଧ୍ୟାୟିଲେ
ମିଳଇ ବିଷ୍ଣୁ ଲୋକରେ ବାସ ।୯

ଡଳିପ୍ରଭା ସାମଲ
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ମହାମାରୀର ବିନାଶ

ସ୍ତବ୍ଧ ଆଜି ପୃଥିବୀ ।।
ସର୍ବତ୍ର ହାହାକାର ।
ମହାମାରୀ କରୋନାର ଆତଙ୍କରେ
ମେଦିନୀ ଥରହର ।
ଭୀତତ୍ରସ୍ତ ସମଗ୍ର ମାନବସମାଜ କରେ
ଆକୁଳ ପ୍ରାର୍ଥନା ।

ବିନାଶ ତ ହୋଇଥିଲା ସେ ମହୀଷାର
କାହିଁ କେଉଁ ଆଦିମ ଯୁଗରୁ
ଏ କେଉଁ ଦାନବ ?
କେଉଁ ଦେବତାଙ୍କର
ବରପ୍ରାପ୍ତିରେ ବଳିୟାନ
ଏ ପରାକ୍ରମୀ ରାକ୍ଷସ ।
ଧ୍ୟାନମୁଦ୍ରାରେ ଦେବୀ ।

ମନୁଷ୍ୟର ଅହଂକାରରୁ
ଜାତ ଏ ଦାନବ ।
ପାଞ୍ଚ ପ୍ରକୃତିକୁ ହେୟଜ୍ଞାନ
କୌଣସି ଅସ୍ତ୍ର ଶସ୍ତ୍ରରେ
ବିନାଶ ନାହିଁ ତାର
ଯୋଗମାୟାଙ୍କର ଚେତାବନୀରେ
ଦେବୀଙ୍କର ତ୍ରିକୁଟ ମାୟା ।

ହଠାତ୍ ଏକ ଲାବଣ୍ୟବତୀର
ରୂପଯୌବନର ବାସ୍ନାୟିତ ବନଭୂମି
ପାଦର ରୁଣଝୁଣୁ ନୁପୂରରେ କମ୍ପିତ ସ୍ୱର ।
କବରୀରେ ଆଶାବରୀ ।

କଙ୍କଣର ଖଣ୍ ଖଣ୍ ଶବ୍ଦରେ
ଆମନ୍ତ୍ରଣର ଝଙ୍କାର

ପୂର୍ଣ୍ଣକୁମ୍ଭ ରସରେ ରସଭରା ନିତମ୍ବ
ନାଭିମଣ୍ଡଳରେ ଶତଶୃଙ୍ଗାରର ଭଉଁରୀ ।
ଅଭିସାର ଅଞ୍ଜନଭରା ନୟନର
ତୀକ୍ଷ୍ଣ କଟାକ୍ଷରେ ରାକ୍ଷସ ଅଭିଭୂତ
ନିସ୍ତବ୍ଧ ବନଭୂମି ।

ଶତସମ୍ଭାରର ରୂପନେଇ ଭୁବନମୋହିନୀ
ବଢୁଥିଲେ ଆଗକୁ ଆଗକୁ
ଏକ ସୁସଜ୍ଜିତ ଜତୁଗୃହ ଅଭିମୁଖେ
ପଛେପଛେ କଦାକାର ମହାମାରୀ
କରୋନା ରାକ୍ଷସ
ପୁରୁଷାକାରର ଆକାର ନେବା ପାଇଁ
ସଙ୍ଗସୁଖ ପାଇଁ
ବାଜୁଥିଲା ମୋହନ ବଂଶୀ,
ଅନ୍ତରାଳେ ରଣଦୁନ୍ଦୁଭି ।

ଅଗ୍ନିସ୍ଫୁଲିଙ୍ଗସମ ତ୍ରିନେତ୍ରୀ ଦେବୀ
ଏବେ ପ୍ରସ୍ତୁତ ଜତୁଗୃହରେ
ସ୍ୱୟଂ ଆବିର୍ଭୂତା ଦଶଭୂଜା ।
ଏବେ ମୋହଗ୍ରସ୍ତର ବେଳ
କରୋନା ରାକ୍ଷସ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ କରାୟତ
ସେ ମୋହାବିଷ୍ଟ, ଶକ୍ତିହୀନ
କେମିତି ବା ବୁଝନ୍ତା ସେ
ମହାଶକ୍ତିଙ୍କୁ, ମହାମାୟାଙ୍କୁ, ମୋହିନୀଙ୍କୁ
ପାଦ ବଢୁଥିଲା ଆହୁରି ଆଗକୁ
ଏକ ମହତ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟର ମନ୍ତ୍ରଧ୍ୱନୀରେ
ନିନାଦିତ ତ୍ରିଭୁବନ
କ୍ରମଶଃ ଦେବୀ ନାଦବ୍ରହ୍ମ
ସହିତ ଏକାକାର ।

ମୋହନ ବଂଶୀର ଝଙ୍କାରରେ
ଉଚ୍ଛୁଳିତ ଯମୁନାର ତୀର
ଏଣେ ଜତୁଗୃହ ମଧ୍ୟେ
ଏକ ଆଗ୍ନେୟ କମ୍ପନ
ଅଗ୍ନିଶିଖା ପରିବ୍ୟାପ୍ତ
ଲେଲିହାନ ଶିଖା ମଧ୍ୟେ ବିନାଶ
କରୋନା ରାକ୍ଷସ ।

ଶାନ୍ତ, ଅବନୀ ଶାନ୍ତି, ବନସ୍ପତି ଶାନ୍ତି ।
ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଗରୁ ମୁଖରିତ ଦେବୀଙ୍କର
ଆବାହନୀ ମନ୍ତ୍ର
ଏକ ମାଙ୍ଗଳିକ ଶୁଭ ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ।

ସଂଘମିତ୍ରା ପଟ୍ଟନାୟକ
ଭୁବନେଶ୍ୱର

ଐତିହାସିକ ବାଲିଯାତ୍ରା (ଓଡ଼ିଶାର ପରିଚୟ)

ଆ କା ମା ବଇ ଗୁଆ ପାନ ଥୋଇ
ଗୁଆ ପାନ ତୋର
ମାସକ ଧରମ ମୋର
ମହାକାର୍ତ୍ତିକ ପୂର୍ଣ୍ଣମୀ ତିଥିରେ
ଥିରି ଥିରି ଡଙ୍ଗା ବାହିବୁ ।

ପୂରୁବ କାଳର ପୂରୁବ ମହିମା
ବୋଇତ ବନ୍ଦାଣ କରୁଥିବୁ ।

ଏହିଦିନେ ଆମ ପୂରୁବ ପୁରୁଷ
ଯାଇଥିଲେ ଦେଶ ବିଦେଶ
ବଣିଜ କରି ଫେରିଲେ
ନେଇ କେତେ ଧନ ବିଶେଷ
ମୋତି ମାଣିକ ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣ ଅଳଙ୍କାର
ବିଦେଶୁ ଆଣି ଆସିଲେ
କରି ବାଣିଜ୍ୟ ବ୍ୟାପାର ।

ବାଣିଜ୍ୟ ପାଇଁ ଗଲେ ଯେ ଜାଭା ସୁମାତ୍ରା
ସେଇଦିନୁ ମନେ ପକାଇ କରି
ବୋଇତ ବନ୍ଦାଣ ହୁଏ ବାଲି ଯାତରା ।

କାର୍ତ୍ତିକ ମାସ ପରି ଧରମ ମାସରେ
ଜନେ ପକାନ୍ତି ବୁଡ଼ ।
ଦର୍ଶନ ଆଶାରେ ବଡ଼ଦିଅଁର
ସିଂହ ଦୁଆରେ ଲୋକେ ଲଗାନ୍ତି ଭିଡ଼ ।

ଓଡ଼ିଆ ଜାତିର ପରମ୍ପରା ଏଇ
କାର୍ତ୍ତିକ ମାସର ପୂର୍ଣ୍ଣଚନ୍ଦ୍ରଟି
ସରଗୁ ଆସିଛି ଓହ୍ଲାଇ ।

ସପ୍ତରଙ୍ଗରେ ରଙ୍ଗିଛି ବୋଇତ
ବୋଇତ ବନ୍ଦାଣ ପୂର୍ଣ୍ଣମୀରେ
ସାଧବ ପୁଅଟି ଖୁସିଖୁସି ମନେ
ଯାଇଛି ଦରିଆ ପାରେ
ସାଧବ ବୋହୂଟା ଅଧିର ହେଲାଣି
ବନ୍ଦାପନା ଦୀପ ଧରି
ସାଧବ ପୁଅ ଆସିଲେ ବିଦେଶୁ
ଘରକୁ ନେବେ ବନ୍ଦାପନା କରି

ଶିଖା ନାୟକ
ଭୁବନେଶ୍ୱର

ଚଷାପୁଅ

ତୁମେତ ସାଉଣ୍ଟି ଆଣ
ଖରା ବର୍ଷା ଶୀତକୁ ତୁମ କ୍ଷେତରେ
ଶତ ସୂର୍ଯ୍ୟର ଆଲୋକ ନେଇ ।
ନିଜ ଭୋକିଲା ପେଟକୁ ପଛକୁ ପକାଇ
ଲୁହକୁ ଲହୁରେ ବଦଳାଇ
ଖୋଲିଦିଅ ଲକ୍ଷ୍ମୀଭଣ୍ଡାର ଦୁନିଆ ଦୁଆରେ ।
ତୁମର ଥାଏ କି ପରିଚୟ ନା ମାନ ସମ୍ମାନ
ତଥାପି ଭ୍ରୂକ୍ଷେପ ନଥାଏ
ପ୍ରମାଣ ପତ୍ରିକା ପାଇଁ ।
ଦିନରାତି ଏକ କରି ଅଳସକୁ ଦୂରକରି
ହସ ହୋଇ ଝରିଯିବାକୁ ପସନ୍ଦ କର ବୋଲି
ଚଷାପୁଅ ଡାକରେ ତୁମେ
ମସ୍‌ଗୁଲ୍ ସଦାସର୍ବଦା ଅଭାବ ଅନାଟନରେ
ସନ୍ତୁଳି ହୋଇ ହୋଇ ତୁମ ଦିନ ସରିଯାଏ
ଦୁଃଖ ସବୁ ଫଲ୍‌ଗୁଧାରା ହୋଇ
ବହିଯାଏ ସିନା କିଏ ବି ଜାଣି ପାରେନା
ତୁମ ଦୁଃଖର ଗଭୀରତାର
ମାପ ବା ସତରେ କେତେ ?
ଅଜବ ତୁମ ଚିନ୍ତାଧାରା
କେଉଁ ଧାତୁରେ ଗଢ଼ା

ତୁମ ଦେହ ଭାବିଲେ ବି ଭାବି ହୁଏନା
ମାଟିରେ ମାଟି ହୋଇ
ପଥର ଛାତିରୁ ସୁନାଫୁଲ
ଫୁଟେଇବାରେ ମାହିର୍ ତୁମେ ଚଷାପୁଅ ।
କୁହତ କିଏ ଜାଣିପାରେ
ତୁମର ଝରିଯାଇଥିବା ଝାଳର ମହତ୍ତ୍ୱ ?
କିଏ ଗଢ଼ିପାରେ ତୁମ ଆଖିର
ନିରବ କାହାଣୀ ।
କିଏ ଶୁଣିପାରେ ତୁମର
ପିଲାଛୁଆଙ୍କ ବିକଳ କ୍ରନ୍ଦନ
ଖାଲି କଂସା ବାସନ ପାଖରେ

ମୁଠାଏ ଅନ୍ନ ପାଇଁ ତଥାପି ଚଷାପୁଅ
ଯୁଗେଯୁଗେ ଗୋଟିଏ କଥା
ଉଡୁଥାଏ ଚାଷ କାମ ଯାହାର
କେତେ ସୁଖ ତାହାର
ସେଇ ଏକା ଯୋଗାଉଛି ଦୁନିଆକୁ ଆହାର ।
ପୁରୁଣା ଯୁଗରୁ ତୁମେ ଧିରେ ଧିରେ
ଆଧୁନିକ ଯୁଗରେ ପାଦ ଦେଲ
ନିଜେ ବଦଳିଲ ବଦଳାଇ ଦେଲ
ନିଜ କଳା କୌଶଳ
ଅତ୍ୟାଧୁନିକ ଯନ୍ତ୍ରର ସ୍ପର୍ଶରେ
ଫଳାଇଲ ଶସ୍ୟ ମାଣେରୁ ଦଶମାଣ
ଭେଟି ଦେଲ ନୂଆ ନୂଆ ଚାଷ ଜ୍ଞାନ
କେତେ ଝଡ଼ ଝଞ୍ଜା, ଦୁର୍ବିପାକକୁ
ନିଜ ପିଠିରେ ବୋହି
ଭଙ୍ଗାଅଣ୍ଟା ସିଧା କରି ବଞ୍ଚିବାର ରାହା
ଦେଖିଛ ଦେଖାଇଛ ଜନସମାଜକୁ
କାଳକାଳ ପାଇଁ
ଚଷାପୁଅଟିଏ ହୋଇ ସମାଜ ବକ୍ଷରେ ।

ଜ୍ୟୋସ୍ନାରାଣୀ ରାଉତ
ନାଳକୋ ଅନଗୁଳ

TOUCHING LIVES

भुवनेश्वर

माननीय केंद्रीय संसदीय कार्य, कोयला व खान मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी तथा सचिव, खान मंत्रालय श्री विवेक भारद्वाज के नालको आगमन पर स्वागत गान प्रस्तुत करते हुए नालको महिला समिति की सदस्याएँ

दशहरा के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंचासीन मो कॉलेज अभियान के चेयरमैन श्री आकाश दास नायक एवं शुभश्री दास (समाज सेविका) के साथ अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

दीपावली की पूर्व संध्या पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा तथा समिति की सदस्याएँ

कनकमंजरी कन्या उच्च विद्यालय (खलीकोट) में स्वच्छता की ओर जागरूकता कार्यक्रम के दौरान स्वच्छता किट का वितरण

नालको महिला समिति द्वारा आयोजित पिकनिक के दौरान अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा एवं सदस्याएँ

नालको महिला समिति द्वारा झरना बस्ती (भुवनेश्वर) के मंदिर परिसर में आयोजित स्वच्छता अभियान में अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा के नेतृत्व में भाग लेती हुईं समिति की सदस्याएँ तथा इस अवसर पर जरूरतमंदों को स्वच्छता किट के वितरण का दृश्य

बाल दिवस के अवसर पर नालको महिला समिति द्वारा आयोजित मैजिक शो कार्यक्रम में महान जादूगर विष्णु प्रसाद से जादू की कला में दिलचस्पी दिखाते हुए नालको कॉलोनी के बच्चे

नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा द्वारा उद्घाटित मधुकुंज नर्सरी में पौधों को निहारती हुई नालको महिला समिति की सदस्याएँ

नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा के साथ क्रिसमस तथा नव-वर्ष - 2023 के स्वागत समारोह में भाग लेती हुई समिति की सदस्याएँ

अनुगुळ

नालको महिला समिति, अनुगुळ की नई उपाध्यक्षा श्रीमती गीतांजली बेहेरा का स्वागत करते हुए समिति की सदस्याएँ

नालको महिला समिति, अनुगुळ की उपाध्यक्षा का अभिनन्दन समारोह

समाज सेविका सुश्री चिन्मयी दास के साथ नालको महिला समिति, अनुगुळ की सदस्याएँ मानव सेवा अनाथ आश्रम में अनाथ बच्चों को आवश्यक सामग्री वितरित करते हुए

अनुगुळ नालको महिला समिति की सदस्याओं द्वारा उद्यान भ्रमण

दीपावली की पूर्व संध्या को मनाते हुए अनुगुळ नालको महिला समिति की सदस्याएँ

दुर्गापूजा समारोह को उल्लासपूर्वक मनाती हुई अनुगुळ नालको महिला समिति की सदस्याएँ

दामनजोड़ी

नालको कन्वेंशन सेंटर, दामनजोड़ी का उद्घाटन करते हुए नालको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री श्रीधर पात्र तथा नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

माँ कंटबासुणनी मंदिर में देवी दर्शन के लिए जाती हुई नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा और उपाध्यक्षा श्रीमती सोनिया पाढ़ी

नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा का स्वागत करती हुई दामनजोड़ी नालको महिला समिति की सदस्याएँ

शहीद लक्ष्मण नायक के वर्षगाँठ के अवसर पर जरूरतमंदों को कम्बल बाँटते हुए दामनजोड़ी नालको महिला समिति की सदस्याएँ

दामनजोड़ी नालको महिला समिति द्वारा हसबैंड नाइट समारोह का आयोजन

दीपावली समारोह को हर्षोल्लास से मनाती हुई दामनजोड़ी नालको महिला समिति की सदस्याएँ

Readers are requested to send their write ups, suggestions and feedback to nmssangini@gmail.com in clear handwriting or soft copy before 15th Frebruyary 2023 - Editor-in-Chief

नालको NALCO

National Aluminium Company Limited

Born in ODISHA..
Grown in ODISHA..
Globally Represents ODISHA...

No. 1
Lowest
Cost Producer
of **Alumina**
in World

No. 1
Lowest
Cost Producer
of **Bauxite**
in World

2nd
Highest
Net Foreign Exchange
Earning **CPSE**
in the Country

NALCO

THE INDUSTRIAL KONARK OF ODISHA

Designed and printed by sanket